नोबेल पुरस्कारः एक कालातीत सम्मोहन

डॉ. डी. बालसुब्रमण्यन

हर साल नोबेल पुरस्कारों की घोषणा के बाद ऐसी बातों को लेकर विवाद शुरू हो जाते हैं कि कौन है जो इस पुरस्कार से वंचित हुआ है, या क्या जिन्हें पुरस्कार मिला है वे इसके पात्र थे, वगैरह। इस साल इसी तरह का विवाद एक माह पहले सितम्बर में ही शुरु हो गया। इसमें जाने-माने वैज्ञानिकों के आलेखों की प्रमुख भूमिका रही। जैसे *दी टेलीग्राफ* के 17 सितम्बर 2012 के अंक में कैम्ब्रिज के प्रोफेसर एथनी डोनाल्ड ने एक सवाल पूछा था कि "एक खोज के लिए कितने वैज्ञानिकों की ज़रूरत होती है?" देखा जाए तो अल्बर्ट आइंस्टाइन जैसे अकेले जीनियस के युग को खत्म हुए ज़माना हो गया है।

वैसे तो अल्फ्रेड नोबेल ने खुद यह शर्त रखी थी कि यह पुरस्कार उसी साल की सबसे महत्त्वपूर्ण खोज के लिए दिया जाएगा, लेकिन आजकल नोबेल पुरस्कार खोज या शोध पूरा होने के बरसों बाद दिए जाते हैं जब उनका महत्त्व समय के साथ स्पष्ट हो जाता है। पहले आम तौर पर पुरस्कार एक ही व्यक्ति को दिया जाता था जिसे नोबेल पुरस्कार संस्था ने बाद में बढ़ाकर तीन कर दिया था। मगर आज भी तीन से ज़्यादा के बीच इस पुरस्कार को नहीं बांटा जाता है।

विवाद एक या एकाधिक व्यक्तियों को पुरस्कार देने के मुद्दे तक सीमित नहीं है। पुरस्कार से सम्बंधित कुछ और मुद्दे उठे हैं और इनमें से हरेक विचारणीय है। *साइंटिफिक अमेरिकन* पत्रिका के संपादकीय पेज पर कहा गया है कि नोबेल पुरस्कार एक कालातीत सम्मोहन है। दूसरे शब्दों में कहा जाए तो समय के साथ-साथ विज्ञान के तौर-तरीकों और कामकाज में कई बदलाव आए हैं लेकिन नोबेल पुरस्कार इनके साथ कदम मिलाकर नहीं चल पाया है।

इसमें से कुछ मुद्दे हैं - (1) क्या यह किसी अकेले या तीन विद्वानों के लिए है या क्या एक टीम को पुरस्कृत किया जाना चाहिए? (2) क्या सिर्फ तीन विषयों (भौतिकी, रसायन, चिकित्सा विज्ञान) की शर्त आज प्रासंगिक रह गई है? (3) अलग-अलग पुरस्कारों के लिए अलग-अलग नियम क्यों हैं? (4) क्या हमें उसी साल की खोज पर टिके रहना चाहिए जैसा कि नोबेल चाहते थे? (5) क्या अन्य विषयों को मान्यता नहीं दी जानी चाहिए? इनमें से कुछ मुद्दे आपस में जुड़े हुए हैं।

कई लोगों को यह अपेक्षा थी कि इस साल का नोबेल हिग्स बोसान के लिए पीटर हिग्स को मिलेगा। ऐसा नहीं हुआ और इसने उपरोक्त मुद्दों में से कुछ को रेखांकित किया। बोसान का नामकरण पीटर हिग्स के नाम पर किया गया है जबकि उनके साथ आर. ब्राउट, एफ. एंगलर्ट, जी. एस. गुरालनिक, सी. आर. हेजेन और टी. डब्लू. बी. किबल ने भी 1964 में उस क्रियाविधि का प्रस्ताव रखा था जिसके लिए इस कण की उपस्थिति अनिवार्य थी। और उनकी बात को सही साबित करने के लिए स्विटज़रलैंड में स्थित लार्ज हेड्रान कोलाइडर में एटलस और सीएमएस टीम के रूप में 6000 वैज्ञानिकों ने इस पर काम किया। तो क्या हमें उन 6 लोगों को पुरस्कार देना चाहिए या सारे 6005 को?

बात केवल बोसान प्रयोग तक सीमित नहीं है। दूसरे

कई महान विचार भी टीम वर्क के परिणाम होते हैं। आज का विज्ञान अकेले जुटे रहने का नहीं बल्कि टीम में काम करने का नाम है। मानव जीनोम प्रोजेक्ट इसका सबसे अच्छा उदाहरण है। जैसा कि साइन्टिफिक अमेरिकन के संपादकीय में सुझाव दिया गया है, शायद वैज्ञानिकों को नहीं बल्कि संस्थाओं को पुरस्कृत करने पर विचार किया जा सकता है, जैसा कि नोबेल शांति पुरस्कारों में किया भी जाता है। वैसे उसकी अपनी समस्याएं हैं।

विषयों के बीच सख्त विभाजन विवाद का दूसरा मुद्दा है। पिछले बारह सालों को देखें तो रसायन के नोबेल मात्र चार सालों में 'शास्त्रोक्त' रसायनज्ञों को मिले हैं। शेष आठ पुरस्कार आण्विक जीव विज्ञानियों, संरचनात्मक जीव विज्ञानियों और जैव-भौतिकीविदों को गए हैं। कई रसायनज्ञ इस पर चकित हैं।

पिछले साल का नोबेल पुरस्कार डॉ. शेख्टमान को क्वासीक्रिस्टल की खोज के लिए मिला था। यह एक ऐसा विषय है जिसे बखूबी भौतिकी में रखा जा सकता है। लेकिन कार्बन के एक अपररूप (एलोट्रॉप) ग्रेफीन की खोज के लिए 2010 का नोबल पुरस्कार रसायन शास्त्र में नहीं, भौतिकी में दिया गया था। यह दर्शाता है कि विषयों की सरहदें धूमिल हो रही हैं, विषय आपस में घुल-मिल रहे हैं, और नए-नए विषयों का जन्म हो रहा है। दरअसल, ग्रेफीन का आकर्षण उसकी रासायनिक संरचना में नहीं, बल्कि एक पदार्थ के रूप में है। लिहाज़ा यह एक नए विषय-संगम पदार्थ विज्ञान में आता है।

एक मुद्दा यह भी है कि अर्थशास्त्र जैसे साफ्ट साइंस के क्षेत्र में नोबेल पुरस्कार शुरू हुए हैं। इससे यह सवाल उभरता है कि जीव विज्ञान (रसायन से अलग) और गणित जैसे जांचे-परखे विषयों के लिए नोबेल क्यों नहीं हो सकते?

यह सही है कि कुछ दूसरी संस्थाएं हैं जो प्रतिष्ठित पुरस्कार देती हैं। गणित में फील्ड पदक और एबेल पदक हैं। डैन डेविड पुरस्कार हैं जो असाधारण वैज्ञानिक, तकनीकी, सांस्कृतिक व सामाजिक उपलब्धियों के लिए दिए जाते हैं (ये 10-10 लाख डॉलर के तीन वार्षिक पुरस्कार हैं)। इनके अलावा चिकित्सा में लास्कर पुरस्कार दिया जाता है। दरअसल, देखा गया है कि आम तौर पर लास्कर पुरस्कार विजेता आगे चलकर नोबेल से भी नवाज़े जाते हैं। इस साल का चिकित्सा का नोबेल डॉ. जॉन गर्डन और शिन्या यामानाका को दिया गया और इसी काम के लिए इन्हें लास्कर 2009 में मिला था (मार्टिन इवान ने 2001 में लॉस्कर जीता और 2007 में नोबेल)। लेकिन पिछली सदी में नोबेल पुरस्कार को बहुत प्रतिष्ठा मिली है और यही उसका तुरुप का पत्ता है। इसी वजह से नोबेल को लेकर इतनी चर्चाएं भी होती हैं। ***(स्रोत फीचर्स)***